• वर्ष : 2 • अंङ्क : 8 • नवम्बर 2015-जनवरी 2016 • ISSN : 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

संरक्षक :

प्रो. दलवीर सिंह चौहान

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

आगामी अंक
20 मई, 2016

रूपेश कुमार चौहान

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

दूरभाष संख्या-09555222747, 09540468787, 0991158532, 09266319639

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vaaksudha.com

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'वाक् सुधा'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की उद्भावना स्पष्टत: नहीं है। अत: इसके लिए शोध-लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* **आगामी अङ्क में प्रकाशनार्थ लेख 5 मई, 2016 तक अवश्य प्रेषित कीजिए। यदि आप लेख टाइप करा कर भेजने में असमर्थ हैं तो हस्तलिखित प्रति पत्रिका में दिये गये पत्र-व्यवहार के पते पर भेज दें।**
* वर्ष के अंतिम अङ्क के प्रकाशन से पूर्व प्रथम अङ्क पत्रिका की वेबसाइट पर अध्ययन हेतु उपलब्ध हो जाएगा।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

ISSN : 2347-6605

सामान्य शुल्क		सदस्यता शुल्क	
वैयक्तिक शुल्क (एक प्रति)	– ₹200	संस्थागत सदस्यता शुल्क (वार्षिक)	– ₹1500
संस्थागत शुल्क (एक प्रति)	– ₹400	पञ्च वार्षिक शुल्क	– ₹6000
वैयक्तिक वार्षिक शुल्क	– ₹800	आजीवन सदस्यता शुल्क	– ₹15000
सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत (वार्षिक)	– ₹1200		

पत्र-व्यवहार का पता :
मकान नं.-41, सूरज नगर (दुर्गा मंदिर के सामने),
आजादपुर, दिल्ली-110033

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 6

श्रीकरभाष्य में प्रतिपादित अद्वैतमत की समीक्षा 7
कुलदीप सिंह

ताल के दस प्राण 10
डॉ. पूजा शर्मा

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में संरचनात्मक वैविध्य 13
गोपेश्वर दत्त पाण्डेय

वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीय उन्नति के आयाम एवं वर्तमान में प्रभाव 16
डॉ. धर्मपाल यादव

भारतीय दर्शन में जाति (एक सिंहावलोकन) 20
डॉ. सरोज गुप्ता

प्रवासी जीवन को अभिव्यक्त करता उपन्यास (सुषम बेदी कृत 'लौटना' के विशेष संदर्भ में) 23
समर विजय

ताल 28
डा. कपिल कुमार

पुराण काल में नारी (देवी भागवत पुराण के संदर्भ में) 31
डॉ. सरोज गुप्ता

'तमस' के संदर्भ में धर्म की राजनीति 34
नवनीत कुमार राय

अशोक की धम्म नीति के निहितार्थ 37
अभिमन्यु कुमार

नागार्जुन की काव्य-कला 39
रमा शंकर सिंह

हिन्दू मुस्लिम एकता में मलिक मुहम्मद जायसी का योगदान 45
विभा सिंह पटेल

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रकवि 'दिनकर' 47
राजीव कुमार

गाय, साम्प्रदायिकता और गाँधी 49
लाजपत राय

चोलकालीन स्थानीय स्वायत व्यवस्था 51
अभिमन्यु कुमार

वैदिक विज्ञान-आधुनिक सन्दर्भ में 53
प्रभात कुमार

रामविलास शर्मा की नज़र में प्रेमचन्द 56
शैलेन्द्र प्रताप

देववाण्यामलकनन्दाकालिन्द्योर्माहात्म्यम् 60
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र

शाब्दबोध 66
प्रियंका शर्मा

पॉलो फ्रेरा का जीवन एवं शिक्षा संबंधी विचार .. 69
राधिका मिश्रा

समकालीन रचनाशीलता की परख (विशेष संदर्भ : 'फिलहाल') 72
सुनील कुमार मिश्र

पराभक्तिः 76
आचार्य पद्मराज (पद्मनाभ) जोशी 'पथिक'

सल्तनत काल में शिक्षा व्यवस्था 80
राम कुमार

परमलघुमञ्जूषा में वर्णित धात्वर्थनिर्णय सम्बन्धी मीमांसक मत 84
प्रियंका शर्मा

कामकाजी महिला का द्वन्द्व 88
अनिता कादयान

स्कूली शिक्षा व्यवस्था के दोष बारबियाना (इटली) स्कूल के छात्रों द्वारा लिखे गये अध्यापक के नाम पत्र 91
राधिका मिश्रा

पत्रकारिता और महामना मालवीय 93
अमित कुमार पाण्डेय

ISSN : 2347-6605

दशभूमिक सूत्र में वर्णित दश भूमियों और दश पारमिताओं के बीच सम्बन्धों की समीक्षा..... 95
उपेन्द्र कुमार
बिदेसिया : भिखारी ठाकुर 99
रणजीत कुमार
हिंदी फिल्मों में स्त्री 104
डॉ. अर्चना उपाध्याय
गाँधी दर्शन : मानव कल्याण का आधार 107
डॉ. पुष्पांजलि
ग्रामीण विकास एवं लोकतांत्रिक सहभागिता : पंचायत प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में 111
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंह
भारत अमेरिका संबंधों में आर्थिक कारक और उनका महत्व 116
डॉ. अखिलेश कुमार तिवारी
संसद की महता : एक अवलोकन..... 119
पूनम
राजस्थान के प्रजामण्डल आन्दोलन का रचनात्मक प्रभाव : स्त्री शिक्षा का विकास..... 122
डॉ. अर्चना द्विवेदी
भारतेन्दुयुगीन निबंधकारों की विचारधारा..... 128
मनीष कनौजिया
जलवायु परिवर्तन : समस्या एवं समाधान भारतीय पर्यावरणीय-चिन्तन के प्ररिप्रेक्ष्य में..... 130
जगनारायण मिश्र
यथार्थ का जीवंत दस्तावेज : अलग-अलग वैतरणी 133
यदुनन्दन प्रसाद उपाध्याय
भास-कालीन सामाजिक संस्थाएँ 136
दिनेश कुमार
साङ्ख्यदर्शनानुसारं दृष्टप्रमाणविषयकं चिन्तनम्..... 139
हरीश चन्द्र कुकरेती
काशीनाथ सिंह के कहानियों में जाति : एक समाज भाषावैज्ञानिक अध्ययन 143
बीरेन्द्र सिंह
जगदीश चंद्र : मजदूर जीवन के यथार्थवादी उपन्यासकार 147
मौह. रहीश अली खां
परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को दर्शाती नयी कहानी 151
शिवानी सक्सेना
नीरज : काव्य-सीमाएँ..... 155
कुसुम सिंह
माघकाव्ये वर्णित राजसंस्कृतौ वर्णाश्रमव्यवस्था... 161
श्रुतिः शर्मा
अरुण कमल के काव्य में उत्तर-आधुनिक भावबोध की अभिव्यक्ति का स्वरूप..... 164
नेहा मिश्रा
केन्द्र और राज्य सम्बन्ध के बीच अनुच्छेद 356 168
साधिका कुमारी
समकालीन हिन्दी नाटक : एक सिंहावलोकन (1947-2000 ई.) 171
राम प्रकाश शर्मा
प्राचीन पंचाल जनपद के प्रमुख नगर 173
डॉ. प्रणव देव
ब्रजभाषा का लोक साहित्य 179
डा. शीतल
कालजयी में गांधीवादी विश्वास 183
डॉ. राम किशोर यादव
मानवीय चेतना के सूत्रधार : संत कबीर..... 186
कमलेश रानी
नवउदारवाद की नीतियां और भारतीय अर्थव्यवस्था एक आलोचनात्मक विष्लेशण 189
किरण गुप्ता

हिंदी फिल्मों में स्त्री

डॉ. अर्चना उपाध्याय

भारतवर्ष में पारसी थिएटर से फिल्मों का आरम्भ हुआ। शुरुआत में महिलाएं अभिनय के क्षेत्र में आने से कतराती रहीं। मंच हो या फिल्मी परदा सभी जगह लड़के ही लड़कियों की भूमिका निभाते रहे। 3 मई, 1913 को हिंदी फिल्मों के आदिपुरुष दादासाहब फालके द्वारा भारत की पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' प्रदर्शित हुई। इस फिल्म में 'तारामती' की भूमिका 'सालुके' नामक एक युवक ने निभाई थी। धीरे-धीरे अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से समाज की सोच बदलती गई। अभिनय के क्षेत्र में लड़कियों का पदार्पण होने लगा। व्ही. शांताराम जैसे पुरुष अभिनेता जोकि फिल्मों में स्त्री की भूमिका निभाते थे, 1921 तक आते-आते इन्होंने स्त्री चरित्र से किनारा कर लिया। जिस काल में कोई भारतीय महिला फिल्म में काम करने के लिए आगे नहीं आती थी उस समय दादासाहब फालके ने अपनी बेटी मंदाकिनी को 'कालिया-मर्दन' फिल्म की भूमिका दी। इस प्रकार पहली बार एक स्त्री फिल्मी पर्दे पर अवतरित हुई। भारतीय फिल्म जगत में दादा फाल्के और उनकी पुत्री मंदाकिनी का यह ऐतिहासिक कदम था।

भारत में पहली सवाक फिल्म 'आलमआरा' 14 मार्च, 1931 में प्रदर्शित हुई। यह फिल्म आर्देशिर एम. इरानी द्वारा बनाई गई थी। "वे सभी सजीव हैं; सांस ले रहे हैं। शत-प्रतिशत बोल रहे हैं; अठहत्तर मुर्दा इंसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।" पहली सवाक (बोलती) फिल्म 'आलमआरा' के पोस्टरों पर ये पंक्तियां लिखी हुई थीं। 'आलमआरा' जोकि नाम से ही प्रतिध्वनित हो रहा है, स्त्री केन्द्रित फिल्म थी। 'आलमआरा' की नायिका 'जुबैदा' हिंदी फिल्म संसार की ध ड़कन बन गईं।

आलमआरा के पश्चात आर्देशिर इरानी ने 'अछूत कन्या' नाम से पहली रंगीन फिल्म बनाई। यह फिल्म भी स्त्री प्रधान फिल्म थी। इस फिल्म में एक ब्राह्मण युवक प्रताप को एक अछूत कन्या कस्तूरी से प्रेम हो जाता है। देविका रानी और अशोक कुमार द्वारा अभिनीत इस फिल्म को अभूतपूर्व सफलता और प्रशंसा मिली।

अधिकांश हिंदी फिल्में पुरुष को केंद्र में रखकर बनायी जाती हैं या पुरुष-प्रधान होती हैं। यहां तक कि फिल्म की सफलता का पूरा श्रेय भी नायक के हिस्से में जाता है। नायिका की उपस्थिति प्राय: नायक का दिल बहलाने के लिए ही होती है। नायिका किसी फिल्म का सम्पूर्ण विषय हो सकती है अथवा फिल्म को सफलता दिला सकती है यह बात आज भी हिंदी फिल्म के निर्माता-निर्देशक सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। इस धारणा को तोड़ने वाले प्रथम भारतीय फिल्मकार के रूप में व्ही. शांताराम का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने 1937 में 'दुनिया न माने' जैसी क्रांतिकारी फिल्म बनाई। इस फिल्म ने समाज में तहलका मचा दिया। बेमेल विवाह और स्त्री की दृढ़ इच्छाशक्ति पर आधारित यह फिल्म सामाजिक चेतना को जगाती है। इस फिल्म की नायिका (शांता आप्टे) को अपने चाचा की साजिश के चलते एक बूढ़े विधुर से विवाह करना पड़ता है। नायिका इस वैवाहिक बंधन को स्वीकार नहीं करती है। सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की दिशा में यह एक क्रांतिकारी फिल्म थी।

'जोगन' एक अनोखी फिल्म थी। 1950 में बनी इस फिल्म में स्त्री के आत्मगौरव और दृढ़ता को दिखाया गया है। इस फिल्म में नायिका (नरगिस) का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध एक बूढ़े व्यक्ति से कर दिया जाता है। नायिका इस विवाह से विक्षुब्ध हो संसार का त्याग कर देती है। वह जोगन होकर जंगल का आश्रय लेती है। उसका प्रेमी (दिलीप कुमार) उसके पीछे आता है किंतु नायिका अब लौकिक सम्बंधों को स्वीकार नहीं करना चाहती। वह एक वृक्ष को लक्ष्मण रेखा मानकर नायक को उससे आगे आने के लिए मना करती है। नायक नायिका के लौटने की उम्मीद से अनेक वर्षों तक उस पेड़ के पास तक आता है। नायिका नहीं लौटती है। वर्षों बाद एक अन्य जोगन

ISSN : 2347-6605

उस पेड़ के पास आकर नायक को वह पुस्तक लौटाती है जो उसने (नायक ने) अपनी प्रेमिका को दी थी। इस प्रकार प्रेमी को एक जोगन का जवाब मिल जाता है। नायिका सांसारिक बंधनों को अस्वीकार कर अंतत: मृत्यु को गले लगाती है। यह अपने आप में एक निराली फिल्म है, जिसमें नायिका सामाजिक विसंगतियों का विरोध करने के लिए समाज को ही त्याग देती है।

स्त्री अस्मिता को दर्शाने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण फिल्म 'मदर इंडिया' है। फिल्म की नायिका राधा (नरगिस) एक साधारण कृषक परिवार की गृहिणी है। साहूकारों के जुल्म और जमींदारों के अन्याय से जूझती हुई भी वह अपना आत्मबल और स्वाभिमान नहीं छोड़ती है। अपने स्त्रीत्व के गौरव से आलोकित न तो वह किसी का आश्रय लेती है और न ही हार मानती है। सामाजिक न्याय और मूल्य की स्थापना के लिए वह अपने ही पुत्र को गोली मार देती है। 'मदर इंडिया' की नायिका अपने अर्जित गौरव के कारण भारतीय स्त्री की आदर्श मानदंड बन गई।

स्त्री पर केंद्रित एक अन्य महत्वपूर्ण फिल्म 'सुजाता' 1959 में प्रदर्शित हुई। नायिका 'सुजाता' एक अछूत कन्या है, पर उसका पालन-पोषण एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में होता है। परिवार में सुजाता की हमउम्र एक अपनी बेटी (रमा) भी है। सुजाता अपने और सगी बेटी के मध्य परिवार द्वारा किए जा रहे भेदभाव को अनुभव करती हुई भी चुप रहती है। रमा को विवाह के लिए देखने आया हुआ अधीर (सुनील दत्त) सुजाता (नूतन) को पसंद करता है। इस बात का दोषारोपण भी सुजाता पर थोप दिया जाता है। इससे आहत सुजाता नदी में कूद कर प्राण त्यागने के लिए जाती है, लेकिन, वहां गांधी की प्रतिमा के नीचे 'आत्महत्या करना पाप है' लिखा देखकर आत्महत्या का विचार छोड़ देती है। यहां सुजाता का मननशील व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। गांधीवादी विचार को पढ़ते ही उसका मन-मस्तिष्क परिवर्तित हो जाता है और वह आत्महत्या का इरादा त्याग देती है। फिल्म के अंतिम भाग में सुजाता रक्त-दान कर अपनी मालकिन की जान बचा लेती है। इससे मालकिन के हृदय का कलुष धुल जाता है। वह सुजाता को 'बेटी' कहकर उसका विवाह अधीर से करवा देती है। गांधी के अछूतोद्धार की भावना से प्रेरित यह फिल्म सामाजिक जागरण की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

इस कड़ी में एक अन्य सशक्त फिल्म 'साहब, बीबी और गुलाम' है। फिल्म में छोटी बहू (मीना कुमारी) जमींदार कुल की प्रतिष्ठा और परम्परा को लम्बे समय तक निभाती है किंतु बाद में वह अपने शराबी और वेश्यागामी पति को पाने के लिए विद्रोहिणी हो जाती है। वह उन्हीं साधनों को अपनाकर अपने पति को लौटाने का प्रयास करती है, जिनके लिए वह वेश्यालयों में जाता है। परिणामस्वरूप नायिका को मृत्यु की आगोश में सोना पड़ता है। अपनी मृत्यु से वह सम्पूर्ण सामन्ती व्यवस्था के ढोंग और अमानवीयता को बेनकाब कर देती है।

स्त्री सशक्तिकरण को बल प्रदान करने वाली एक अन्य फिल्म 'आंधी' है। इसकी नायिका (सुचित्रा सेन) स्त्रियों के लिए आमतौर पर चुनौतीपूर्ण समझे जाने वाले राजनीतिक क्षेत्र में उतरकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। फिल्म में स्त्री के संदर्भ में पारिवारिक तथा सामाजिक विचारों का सफल चित्रण हुआ है।

फिल्म 'अर्थ' की नायिका (शबाना आजमी) आधुनिक स्त्री के स्वाभिमान और स्वावलंबन की कहानी है। इसमें नायिका अपने पति के प्रेम सम्बंध से सहमत नहीं होती और उससे विद्रोह कर देती है। वह पति से अलग होकर जीविका के लिए साधन ढूंढ़ती है। इस यात्रा में उसे एक साथी मिलता है। नायिका उस पुरुष को मित्र के रूप में तो स्वीकार करती है, किंतु वैवाहिक बंधन में नहीं बंधना चाहती। नायिका का यह निर्णय स्त्री मनोविज्ञान के विश्लेषण की दरकार रखता है। फिल्म यह घोषणा करती है कि अस्तित्व की स्वतंत्रता की यात्रा में स्त्री अकेली चल चुकी है।

'मिर्च मसाला' की नायिका (स्मिता पाटिल) एक स्वेच्छाचारी अधिकारी के आतंक, व्यभिचार और हिंसा का अपार साहस के साथ मुकाबला करती है। नायिका सूबेदार की आँखों में पिसी हुई लाल मिर्च झोंककर अत्याचार और अत्याचारी दोनों का अन्त कर देती है। फिल्म में ग्रामीण समाज में होने वाले अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करती हुई स्त्री का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

कला तथा व्यावसायिक दोनों प्रकार की फिल्मों में स्त्रियों को केंद्र में रखकर अनेक सशक्त फिल्में बनी हैं और लगातार बन रही हैं। जुबैदा, बंदिनी, शारदा, अनुपमा, भाभी, घूंघट, चंदन का पलना, मैं चुप रहूंगी, अभिमान, मंडी, मंथन, भूमिका, मम्यों जैसी फिल्मों में स्त्री मन की परतों को खोलने का प्रयास किया गया है। स्त्री पर होने वाले मानसिक और शारीरिक जुर्म पर आधारित अनेक फिल्मों जैसे-इंसाफ का तराजू, औरत का इंतकाम, दामिनी, बैंडिट क्वीन, गुलाबी गैंग में स्त्री का उग्र और प्रतिशोधात्मक चरित्र उभरकर सामने आया है। चक दे इंडिया और बॉबी जासूस स्त्री को केंद्र में रखकर बनाई गई उद्देश्यपरक और मनोरंजन प्रधान फिल्में हैं।

पिछले डेढ़ दशक में स्त्री केंद्रित अनेक सशक्त फिल्मों का निर्माण हुआ है। 2000 में प्रदर्शित फिल्म 'अस्तित्व' स्त्री के निजी संसार की सार्थकता को पुष्ट करती है। फिल्म यह बताती है कि एक कर्तव्यपरायण पत्नी तथा ममतामयी मां होने के साथ ही उसका अपना निजी 'अस्तित्व' भी है। 2004 में प्रदर्शित फिल्म 'फिर मिलेंगे' स्त्री के व्यक्तिगत जीवन और व्यावसायिक जीवन के अन्त:संघर्ष की कहानी है। 2006 में प्रदर्शित 'डोर' स्त्री-शक्ति को दर्शाने वाली एक सक्षम फिल्म है। यह कहानी परम्पराओं और रूढ़ियों में जकड़ी हुई उन दो औरतों की है जो संयोग से मिलती हैं तथा सामाजिक रुढ़ियों को तोड़ने में एक-दूसरे की सहायता करती हैं। 2012 में बनी इंग्लिश-विंग्लिश एक मध्यवर्गीय गृहिणी की कहानी है। इसमें नायिका घर से बाहर निकलकर अंग्रेजी भाषा सीखने का निर्णय लेती है। इससे उसका आत्मसम्मान और आत्मबल जाग्रत होता है। 2014 प्रदर्शित 'क्वीन' की नायिका युवा सोच की पहचान बनती है।

स्त्री अधिकारों की बात करना या चर्चा करना आज एक फैशन बन चुका है। साहित्यिक गोष्ठियों, राजनैतिक चर्चाओं, सामाजिक बहसों के बीच स्त्री अधिकार या स्त्री मनोविज्ञान पर बात करना प्रबुद्ध और उदारचेता होने का एक उपकरण है। टेलीविजन, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं से होते हुए यह मुद्दा चाय की दुकानों और घरों के बैठकखाने तक अपनी पकड़ बना चुका है। हिंदी फिल्में स्त्री से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है। स्त्री कोई राजकन्या हो या नगरवधू, मालिक की पुत्री हो या मजदूर की बेटी, मध्यवर्गीय गृहिणी हो या जमींदार घराने की कुलवधू, आधुनिक विचारों वाली चंचल बाला या भोली-भाली कृषक कन्या, पति और परिवार के पति समर्पित या अपने स्वार्थ के लिए छल-कपट करती हुई, सामाजिक मर्यादाओं के दबाव में अपनी प्राकृतिक इच्छाओं का दमन करती हुई या विद्रोहिणी, कुशल पुलिस अधिकारी के रूप में या दस्यु सुंदरी के रूप में, राजनीतिज्ञ के रूप में या नायक के प्रेम में डूबी हुई सभी रूपों में फिल्मी परदे पर उतारी गई है। स्त्री की विविध छवियाँ-माँ, बेटी, बहन, प्रेमिका, भाभी, नानी, दादी, सास, ननद की भूमिकाओं में सजीव हुई हैं।

सफल नायिकाओं ने स्वयं को विभिन्न चरित्रों में फिल्मी परदे पर प्रतिष्ठित किया है। नरगिस, मीना कुमारी, वहीदा रहमान, शबाना आजमी और स्मिता पाटिल जैसी अभिनयकुशल तथा प्रतिभासम्पन्न अभिनेत्रियों ने स्त्री के अनेक रूपों को फिल्मी परदे पर उतारा है। किंतु आज भी स्त्रियों को यथार्थ जीवन और फिल्मी परदे दोनों ही जगहों पर वह स्थान नहीं मिल पाया है जिसकी वह वास्तविक हकदार हैं। घर और बाहर सभी जगह स्त्री अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। भारतीय फिल्म उद्योग में अधिकांश निर्माता-निर्देशक पुरुष होने के कारण स्त्री-केंद्रित कहानी लिखते या छायांकित करते हुए उनके दृष्टिकोण की अपनी सीमा हो सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अधिकाधिक महिलाएं शिरकत करें।

इसके साथ ही फिल्म संसार स्त्री-मुद्दों के प्रति पुरुष निर्माताओं के अधिक संवेदनशील और दृष्टि सीमा बढ़ाने की अपेक्षा रखता है।

अच्छी फिल्में सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं होती हैं, बल्कि वे जिस समाज, देश या व्यक्ति समूह के बारे में होती हैं, उनकी परीक्षा और समीक्षा भी करती हैं। हिंदी फिल्मों को महान सफलता तब मिलेगी जब वे मानवीय मूल्यों को प्रचार-प्रसार में सहायक हों। साथ ही स्त्रियों, बच्चों तथा सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण हेतु समाज को सचेतन और संवेदनशील बनाने की दिशा में क्रियाशील हों।

एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी-विभाग, श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संदर्भ सूची

1. साहित्य और सिनेमा, संपादक-पुरुषोत्तम कुंदे, हिन्दी सिनेमा का इतिहास, लेखक-डॉ. शिल्पा दादाराव जिवरग, संस्करण-2014, पृष्ठ 52
2. सिनेमा के सौ बरस, संपादक-मृत्युंजय, स्त्री चरित्र का विश्लेषण, लेखक-विजय शर्मा, संस्करण-2000, पृष्ठ 233
3. गूगल शोध के आधार पर।

ISSN : 2347-6605